प्रतिष्ठा में

माननीय श्री मनोज ठक्कर जी एवं
सुश्री रश्मि छाजेड़ जी
शिव ओउम साई प्रकाशन
95/3 वल्लभ नगर
इंदौर ।

परमश्रद्धेय लेखकगण

आपके द्वारा रचित दिव्यतम आध्यात्मिक रचना, काशी मरणान्मुक्ति, के बारे में कुछ लिखने या कहने के लिये साहस ही नहीं कर पा रहा हूँ। समझ नहीं आ रहा है कि कहां से शुरु किया जाय? यह कार्य अत्यंत दुष्कर एवं कठिनतम प्रतीत हो रहा है। कई मास हो चुके है कई बार इस पुस्तक का पाठन चुका हूँ पर अभी भी कुछ कहने या लिखने के लिये मतिभ्रम में ही हूँ। जैसे आप एक गूंगें–अंधे व्यक्ति को मिठाई का टुकडा मुंह मे रख कर उसको कह रहे हो कि इस मिठाई के स्वाद का जिह्वा जैसा वर्णन करो। श्मशान वैराग्य एवं इस वैराग्य के माध्यम से मोक्ष पर यह रचना एक तरह से अतुलनीय, अप्रतिम एवं अवर्णनीय है। चाण्डाल से शिवत्व प्राप्त होने की अनोखी कथा है।

फाफामाऊ ग्राम के श्मशान से कहानी चलते हुये काशी एवं बारह ज्योर्तिलिगों की परिक्रमा कर पुनः काशी आकर समाप्त होती है। इस कहानी में स्थूल काशी से मानव में स्थित सूक्ष्म काशी तक का उपनिषदीय वर्णन बहुत ही गहन एवं रोचक है।

पुस्तक में स्थूल वाराणसी के बारह ज्योर्तिलिगों, घाटों, मोहल्लों, वहां के निवासियों एवं उनके रहन–सहन, गुणों एवं काशी के ऐतिहासिक वर्णन इत्यादि के बारे में बड़ी विस्तृतता एवं बड़े ही साधिकार वर्णन किया गया है।

ईस्माईल–चाचा, भुतू–चाचा, राघव, यशोदा, जूरी एवं बुद्धेश से महा के मानीवय रिश्तों की विभिन्न घटनाओं को जो सजीव चित्रण किया गया है वह अत्यंत मार्मिक होकर बार–बार आखों को अश्रुपान करा देता है। साथ ही कबीर,तुलसी, वकीली, रामानंद, शकराचार्य, ओंकार एवं दिवोदास आदि के माध्यम से जिन प्रसंगों का वर्णन है वे भी अपने आप में अतुलनीय है । प्रत्येक अध्याय की अंतिम पंक्ति पर याद रख कि मै तेरा गुरु नहीं हूँ के माध्यम से गुरुरुपी आत्मा का साक्षात्कार करने का वर्णन भी अकल्पनीय है। यहां पर यह लिखना भी उल्लेखनीय है कि यह रचना उपन्यास जैसी प्रतीत न होकर एक न्यासीय घटना सी है। ऐसा लगता है जैसे किसी के सत्य जीवन चरित्र से हमारा साक्षात्कार हो रहा है।

...2...

आपकी यह आध्यात्मिक रचना प्रत्येक कोण यथा–भाषा शैली, भाषा शुद्धता, हिन्दी संस्कृत एवं उर्दू के शब्दों का अद्वितिय एवं अनुपम उदाहरण है। हम सुनते आये हैं कि शब्द छलते हैं और शब्दों की संपूर्ण व्याख्या किसी भी प्रकार से सभंव नहीं होती किन्तु इस रचना में उपयोग की गई भाषा–शैली, हिन्दी एवं सस्कृत के शुद्धतम शब्दों से छलनी होकर में कृत कृत हो गया। हलांकि मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि मै न ही विद्वान, साहित्यकार, भाषाविद् और न ही अध्यात्मविद् हूँ ।

मेरा तो यह तक मानना है कि इस पुस्तक पर पाठकगण सिर्फ अपने विचारो से आपको अवगत करा सकते है। इस पुस्तक पर किसी भी प्रकार की समालोचना या आलोचना देना किसी भी विद्वान के द्वारा संभव प्रतीत नहीं होती है और यदि कोई ऐसा दुस्साहस या धृष्टता करता है तो उसकी बुद्धि, पांडित्य और विवेक का क्या कहा जाय ?

माता सरस्वती एवं काशी विश्वनाथ के के चरणों में अर्पित आपकी इस अद्वितिय रचना में वैसे तो आया हुआ एक–एक शब्द गहरे समुद्र से निकाले मोती सा है जो कि अपने आप में पूर्ण सार बयां करता है परन्तु महा के लिये आपके दवारा इस रचना में **ईश्वरांश** शब्द की उत्पत्ति के लिये मेरे पास शब्द नहीं है कि अपने हृदय के उद्‌गार कैसे प्रकट करुं ? मेरे हिसाब से संसार के शब्दकोष का यह सबसे **सुंदरतम** एवं सारगर्भित शब्द है जिसे किसी भी प्रकार की व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। मानव के लिये इससे सुंदरतम शब्द कोई नहीं हो सकता।

मैं आप जैसे सरस्वतीपुत्र एवं शिवभक्त की इस पवित्रतम एवं दिव्यतम आध्यात्मिक रचना हेतु आपको हृदय–कमल से कोटि कोटि धन्यवाद प्रेषित करते हुये भविष्य में ऐसी ही उच्च कोटि की रचनाओं हेतु परमपिता परमेश्वर से आपको और अधिक आर्शीवाद प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

आपके आदर एवं सम्मान में ।

आपका एक आत्मीय

(सुनील कुमार वर्मा)

पता
सुनील कुमार वर्मा 'मुसाफिर'
क्वार्टर एच 1 एम0जी0एम0 मेडिकल कालेज कैंपस
इंदौर
मोबाईल नंबर 98264–92940

सुनते सुनते न थकूंगा कभी भी यह कि

पर याद रख कि मै गुरु नहीं हूँ
गुरु तो हूँ पर तेरा गुरु नहीं हूँ ।

आदि तो हूँ पर अंत का पता नहीं
शुरु तो हो चुका हूँ मगर शुरु नहीं हूँ ।

अंदर तो सदियों से रहता आया हूँ खुद के
मगर आज तक रुबरु नहीं हूँ ।

कहने को सदसाला पौधा हूँ
मगर अभी भी तरु नहीं हूँ ।

रेतीली काया से बना है ये जिस्म
मगर फिर भी मैं कोई मरु नहीं हूँ ।

तेरी तलाश में जनम–जनम भटकना लिखा है तो भटकूंगा ही
मगर उससे डरु नहीं हूँ ।

कहने को तो रहता आया हूँ एक चार दीवारी में
मगर फिर भी घरु नहीं हूँ ।

अनल जलाने की कोशिश करता आया है बार–बार
मगर फिर भी जरु नहीं हूँ ।

कलम तो लिखने के लिये रुहानी हूँ
मगर फिर भी बरु नहीं हूँ ।

यह सुनते–सुनते उस मुकाम पर आ गया हूँ
जहाँ पर न तो तू गुरु है और न ही मै गुरु हूँ ।

सुनील कुमार वर्मा 'मुसाफिर'
98264–92940